..जाति.. न पूछो प्रेम की.. ।

ऊँचे..बहुत ऊँचे..खडी चढाईयो वाली पहाड पर आत्मलीन से वे दोनों.एक दूसरे के उष्ण शोणित से तरंगित हाथों में हाथ डाल बढते चले जा रहे थे तभी पीछे से किसी ने जोर का धक्का दिया था..एक बडे प्रस्तर खंड की भॉति लुढकती हुई हजारों फीट गहरे खाई में गिर पडी वह. मगर एकदम सीधी जैसे किसी ने हाथ से उठा कर वहॉ खडा कर दिया हो।सिर उठा कर देखा तो उपर शिखर पर खडा दैत्याकार अरमान अपना दोनो हाथ आसमान की ओर उठा कर ठहाका लगा रहा था ।खड्ड के पास बहती धार में उसने आश्चर्य से अपने को देखा उसकी नाक कटी हुई थी ।चेहरा एकदम विभत्स लग रहा था ।इतनी ऊचाई से गिर कर भी इस प्रलयंकारी चट्टानों ने मात्र उसकी नाक ही काटी आखिर यह कैसे..प्रस्तर खंड की भॉति खडी मोहिता सोचती रह गई थी ।उसने फिर ऊपर देखा. अरमान वैसे ही हॅसता जा रहा था ।अपने दोनो हथेलियों को मुॅह के करीब लाकर इतनी जोर से चिल्लाई थी वह मानो कयामत तक उसकी आवाज गूंजती रहने वाली हो ‘अरमाऽऽऽऽऽनऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ।नीचे आओ..।नीचे आओ अरमाऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽन।आवाज उसत क पहुॅच गई थी मगर इसका जबाब उसने जोर से नहीं बल्कि बेहद धीमे स्वर में.. फुस्फुसा कर दिया था ‘तुम आ जाओ मैं इंतजार करूॅगा ।’ इतनी ऊॅची..चढाई. अकेले किस दम पर करे ।शिखर से गिरते ही उसके हौसले पस्त हो चुके थे ।पॉवों में अब वो पहले वाला दम कहॉ. ।कैसे पहुॅचेगी वह वहॉ तक. अपने अरमान तक.. ।वह तो इतमीनान से वहीं बैठ गया था हॅसता हुआ ।निराश होकर वह फिर चिल्लाई मगर इस बार उसकी आवाजें साइलेंसर फटे फटफटी कीतरह कर्कश हो गई थी और शायद दूसरे को क्या उसी की समझ में नहीं आई कि वह आखिर क्या बोल रही है।अपनी असहायता पर वह वह रो पडी । ऐसा लगा जैसे ऊपर से एक बडा पत्थर लुढकते हुए उसके कलेजे पर आ गिरा हो और वह घुटने के लिए विवश. .उसकी सॉस थम भी नहीं रही है और निकल भी नहीं रही है ।परेशान परेशान ..पसीने से लथपथ .. गॅू गॅू करती मोहिता की नींद खुल गई

अचानक.. ।कैसा भयानक स्वप्न था ।हे प्रभो ।अपने आप को संयत करने के लिए बिस्तर से उठकर कीचन तक गई. फ्रीज से पानी का बोतल निकाला..कुछ पीया कुछ से बेसिन के पास जाकर चेहरे पर उडेल दिया था ।धीरे से दरवाजा खोलकर बाहर वाली बालकनी में आ कर रेलिंग के सहारे झुक कर खडी हो गई ।बाहर रात का अजीब सन्नाटा.. सडको पर

एक लाइन से खडे मातम मनाते पीले बल्ब..नीचे कहीं बसें. खडी. गाडियॉ कतारों में खडी ... ।कभी कभार पगलाई सी दौडती कोई गाडी भागती दिख जाती ..फिर वही सन्नाटा ।कल अरमान के घर रिश्ते फाइनल करने के लिए सबको जाना है. मम्मी पापा तो कल ही आ गए थे बदायुँ से आ गए हैं ।.अपनी नई जिन्दगी जीने की तमन्ना कभी कभी इतना अधीर बना देती है बस स्वार्थ से सने ख्वाब ..ख्वाब. और ख्वाब ही चारो तरफ अंगडाईयॉ लेती नजर आती हैं ।आज कल मोहिता भी इसी के मोहपास में पड गई है ।अरमान के अलावा उसे कुछ और सूझता नहीं . बिना वजह चिढ जाती है दूसरी बातों से ।

अरमान ने उसे जीन्दगी जीने की जो सपने भरी राहें दिखाई है. उस पर सोने जवाहरात भले न लगे हों मगर वह मखमली .सुखमयी. और सुनहरी तो अवश्य ही है. ।भले ही जीन्दगी आग का दरिया हो. वे दो मजबूत हाथें आकर उसे उस पार. झील के उस पार .हरे हरे नाजुक घासों के उपर.. शान से खडे छायादार सुनहरे सेबों से लदे वृक्ष पर ..रेशम की डोरी में झूला झूलाकर.. सारी जीन्दगी लोरी सुन सुन कर मीठी नींद में सुलाकर रखेगा ।

उसकी बहुत सी आदतें नापसंद होने के वावजूद उसे कोई एतराज नहीं. क्योंकि सम्पूर्ण अरमान ही उसका है. उसके लिए कुदरत का नायब तोहफा ..सौंदर्य के साथ कितना समझदार भी. चाची की बीमारी में उसने सम्पूर्ण जिम्मेवारी उठाकर एक कर्त्त व्यनिष्ठ पुत्र की भूमिका अदा की थी ।वरना आज क्या स्थिति होती ।उफ ..वह भी कितना दर्दनाक मंजर था ।चाचा की पोस्टिंग बाहर..चाची और दोनो छोटे बच्चे..वह

किसी व्रत के बाद का ही दिन था . सुबह से ही उनका पेट दर्द. कमर दर्द. उलटी. दस्त .यानि हालत पस्त. ।मोहिता ने डाक्टर के पास ले चलने की जिद भी की..मगर उन्होंने गैस का रोना रोकर मना कर दिया 'एसीडीटी की दवाई है मेरे पास . अभी खा लेती हूँ ।'मगर होते होते रात के दस बज गए..घर में जितनी भी दवाईयॉ थी .उनके आदेश पर मोहिता एक के बाद एक करके देती जा रही थी कोई असर नहीं..बारह बजते बजते. .बाथरूम में उलटियॉ करते करते वहीं पर बेहोश होकर वह गिर पडी थी..बदहवास सी मोहिता.... किसी तरह उठा कर बिस्तर तक लाई कभी पॉव मलती कभी सर दबाती.. अचानक उसे अरमान याद आ या ।आजकल यहीं था छुट्टियों ।मुश्किल से दस मिनट लगे होंगे..गाडी लेकर वह हाजिर था ।चाची को हॉस्पीटलाइज कर वह वही रूक गया था.टैक्सी से इसे घर भेज दिया ..बच्चे अकेले थे न।चाचा सवेरे आ गए अरमान उन्हें वहीं पर मिला।उसका यह एहसान उन्हें अन्दर तक छू गया था ।

शादी के बाद अमेरिका जाएगा मगर सैटल्ड तो इंडिया में ही होना है ।सरकारी सेवा में पिता हैं पॉच साल बाद रिटायर्ड हो जाएगें..तब तक उसे किसी हाल में वापस आना ही होगा ।वह उन्हें बहुत सुख देना चाहता है ..जी भर कर उनकी सेवा करना चाहता है।मोहिता उसके इस मातृ पितृ भक्ति पर खामोश हो जाती. उसे लगता वह अपने माता पिता के प्रति कौन सी भक्ति दिखा रही है.. ।

'मॉ ने जैसे ही सुना था. छोटे शहर की सीधी सादी. सरल रेखा सी कन्या महानगर में तीन चार महीने में ही पंख लगा कर उडने के लिए तैयार...तब तो उनके होश फाख्ता हो गए थे ।नंगे पॉव दौडी चली आई थी.. रात के सन्नाटे में किसी व्यथित पाखी सा विलाप करती उनकी दर्द भरी आवाज मोहिता को जड किए जा रही थी ।जमीन और आसमान के साथ जैसे वह विशाल बिल्डिंग भी हिलने लगी हो ।उस समय फरिश्ते की भॉति चाची ने उस तपते रेगिस्तान में अपने स्नेह का शीतल ऑचल फैला दिया था । जमाने की दुहाई देते हुए कहा 'जीजी जमाना कहॉ से कहॉ चला गया और आप वहीं अठारहवीं सदी के दरवाजे पर खडी कुल गोत्र के झमेले में अटकी पडी कुंडी खटखटा

रही हैं. कान्यकुब्ज नहीं है तो क्या . कोई तो ब्राह्मन है. अब ऐसा वर तो हजार चराग लेकर ढूढने से भी शायद मिले ।और जिनकी बातें आप कर रहीं हैं वहॉ भी धडाधड तलाक हो रहे हैं. मतलब तो कन्या की खुशी से न है ।बिन अठन्नी खरचे दुल्हा मिया दरवाजे पर हाजिर.. ।लडकी काफी सयानी है आपकी. फिर कौन सा इतना दहेज संभाल कर रखी हैंकि इतरा रही हैं।'

पिता ने तो पहले भी तर्क वितर्क के जाल में ज्यादा उलझा कर भ्रमित करने की कोशिश नहीं की थी ।इतिहास के प्रोफेसर थे उन्हें सब पता था जतियों के बारे में ।आर्य. द्रविड . ऑस्ट्रीक. आदि के मिलने से जिस सभ्यता का विस्तार हुआ

उसके बाद भी इतनी सारी जातियॉ जो बाहर से आई आखिर कहॉ विलिन हो गई।हूण .. आभीर.. अफगान. मुगल..मंगोल. काकेशियन वगैरह वगैरह.. हजारों हजार साल के इतिहास में रचते बसते एक हो गए ।जातियों का ढॉचा तो बहुत बाद में बना ।मगर मम्मी का कहना था इतिहास में जो भी हुआ हो मुझे उससे क्या . मुझे तो अपने खानदान के सात पुश्त का ही किस्सा सुनाया गया है और वे लोग तो पंडित ही थे वेद पाठी मांस मच्छी लहसून प्याज तक नजें छूने वाले ।'

'कश्मीरी पंडित और कायस्थ माता यही परिचय दिया था अरमान ने ।चाची ने कहा कहीं का भी पंडित है ठीक ही है ।अब बीस बिस्वा कहॉ ढूढेंगे ।आखिर बडी लंबी बहस के बाद मम्मी को चुप होना ही पड़ा. ।कन्या ने भी इतनी अधीरता नहीं दिखाई. "ठीक है एमबीए कर ले अच्छी जॉब मिल जाएगी ।फिर. तो तो दुनिया अपनी मुट्ठी में ।'बडे मायूस होकर दो जवॉ दिल दो साल भर तक न मिलने की स्वयं कसम खा चुके थे ।हॉ घर के और लोगों से बात कर के अपनी बातें एक दूसरे तक पहुॅचा सकते थे ।प्यार झुकता नहीं इसलिए वे दोनो अपने आप को ही झुका रहे थे. समय की भीषण आग पर तपा तपा कर पुख्ता कर रहे थे ताकि जमाना उन्हें कभी एक दूसरे से जुदा न कर सके ।महत्वकांक्षी स्वाभिमानी वाला अपने प्यार पर भरोसा कर उसे इत्मीनान से सुरक्षा के सैकडों तालो में

बंद कर खुद को बडी सुरक्षित महसूस करती हुई कष्टपूर्ण दो साल अपने कॉल सेंटर और चाची के घर पर व्यतीत करती रही थी ।

वह पहाड सा इंतजार एक ए क दिन करके आखिर खत्म होना था हुआ भी ।मम्मी डैडी उसके माता पिता से बात करने के लिए तैयार बैठे थे ।

मॉ के इस घर में पॉव रखते ही चाची का सात साल पुराना टेरीकोटा का गणेश दिवार से गिर कर फर्श पर बिखर गया ।चाची ने डबडबाई ऑखों से दीवार की ओर देखा 'अभी कल ही तो घर में ह्वाईटवाशिंग हुआ है.. लगता है मजदूरों ने कील लगाते हुए कुछ असावधानी की होगी ।'टुकडों को सहेजकर उठाते हुए वडी ही करूण आवाज में बोलरही थी ।सहज दिखने की कोशिश कर रही थी तो केवल मम्मी पापा को दिखाने के लिए वरना अब तक तो वो ताडका बन गई होती ।

रात भर सहस्त्रों इन्द्रधनुष उसकी ऑखों में झिलमिलाते रहे थे।कहॉ से करेंगे शादी . कौन सा दिन तय करेंगे. दिसंबर में ही ठीक रहेगा उसके छोटे भाई को जो आर्मी में है. आराम से छुट्टी मिल जायेगी !..अरमान को पाने का सुखद एहसास उसके कलेजे में एक मीठा ख्याल पैदा कर रहा था ।कितनी जल्दी अब दो दिल मिल कर एक हो जाएगे. यूँ हाथ बढा कर उसे छुते ही जिन्दगी खिलखिला कर हॅस पडेगी ।उसकी नीली नीली ऑखें जैसे तावी नदी के बहते पानी के नीचे चमकते छोटे बडे रंगीन पत्थर..।छोटी बहन अपनी पढाई समाप्त कर किताब टेबुल के ऊपर रखने से पहले एक बार उसकी ओर देखा था ।अपने बेड पर चित्त लेटी मोहिता एक टक छत को निहारती हुई धीमी धीमी मुस्कुराती अपने तसव्वर मेंविचरन कर रही थी।दिन भर की थकी. ..ऑखे एकदम बोझिल ..मगर दिमाग शांत ही नहीं हो पा रहा था ।न जोने कब उसकी ऑखें लगी... पसीने से लथपथ वह उठी तो उसने पाया था. यूँ ही चित्त लेटी थी और दोनों हाथ कलेजे पर थे ।उफ् कैसा भयानक सपना था ।

खिडकी के पास खडी खडी उसने एक बार फिर बालकनी के बाहर मेन रोड का अवलोकन किया ।गहरे अन्धेरे में झुकी झुकी पीली रोशनी और भयानक लगने लगी । सृष्टि बनाने वाले कितने महान. जड और चेतन दोनो को समान अहमियत देकर रचा है अपनी कल्पना को ।मनुष्य विहिन यह सडक.. यह अट्टालिका..कितना खौफनाक दिखता है ।सृष्टि का मालिक ईश्वर इसका निमार्ण कर यहॉ की बादशाहत मनुष्यों के हाथ में दे दी ।आदम और हव्वा की सृष्टि बन गई फिर. ।खयालों के बियावान में भटकते भटकते फिर वह अरमान के इर्द गिर्द चक्कर काटने लगी. रंग बिरंगी उडती हुई तितलियों जैसी उसकी हॅसी. मात्र तीन साल से वह उसे जानती है . तीन कहॉ. एक ही ऩ. दो साल तो वह दूर ही रहा..न फोन. न चिट्ठी. ।मगर नहीं .सदियों से जानती है वह उसे ।जनमों से भूखी प्यासी वह इसी के इंतजार में भटकती हुई इस ब्रह्मांड में चौरासीहजार कोटि योनि का सफर तय कर रही थी ।अचानक उसका मन किया उसकी आवाज सुनने का. फिर खयाल आया सपनों की नगरी में विचरन कर रहे होंगे महाराज.. ।ठीक है बस चंद दिनों की दूरियॉ. ।रात में नींद न आए तो रात बडी लंबी हो जाती है़. हालाकि उसका काम रात में जगने का ही है़. मगर तब वह काम कर रही होती है. और उसके इर्द गिर्द का माहौल भी दिन जैसा ही होता है. ।छोटी बहन दिन में नौकरी करती है मगर प्राईवेट से एम कॉम कर रही है इसलिए रात में देर तक पढती रहती है।उसकी नींद न खुल जाए इसलिए अपने टेबुल लैंप के ऊपर छोटा सा टावेल डाल एक दम नीचे झुका कर कहानी की किताब पढना शुरू किया. ।एक दो पन्ने उलटने के बाद किताब बन्द..लाईट बन्द़. ।फिर थोडी देर गहरी सॉस लेती पता नही कब नींद के महाजाल में आबद्व हो कर एकदम शांत हो गई थी ।

सुबह नाश्ता पानी का खास झंझट था नहीं सप्तमीका व्रत था सबका. पूजा पाठ निबटा कर तैयार वैयार हो करनिकल पडे थे उसके घर की ओर ।ज्यादा दूर नहीं है उसका घऱ. पिता भारत सरकार के उस विभाग के डायरेक्टर. .जहॉ कमाई का कोई बंधन नहीं..चार चार फ्लैट्स़. तीन लंबी लंबी गाडियॉ. एक फार्म हाउस़. ।और एक पैसा दहेज

नहीं ।. चाची पूरे रास्ते इस बात को महिमामंडित करती रही थी कि किस्मत हो तो मोहिता जैसी. ।

नए बसते हुए इलाके में पॉच सौ गज की कोठी. . वैसे रहते तो कहीं और हें सरकारी फ्लैट में. मगर आज उनलोगों को अपने इसी नए कोठी पर बुलाया था ।बडे गर्म जोशी के अपने भव्य ड्राइंग रूम में मिले . सुन्दर सी पत्नी पीछे खडी मुसकुरा रही थी ।अरमान आकर बडी अदब से उनलोगों का अभिवादन कर दूसरे कमरे में चला गया ।कितनी शालिनता है इस लडके में शादी व्याह की बात चल रही है.. यह सोच कर अन्दर चला गया. ।चाची मन ही मन उन लोगों के शालिनता . सम्पन्नता. पर न्योछावर हो रही थी ।बहुत तैयारी कर रखा था उन लोगों ने. मगर सबका व्रत जो था ।

लडके का पिता कुछ बातें कुछ बातें करते करते अचानक चुप हो गए. ।कुछ देर अपनी हथेलियों की अंगुलियों को एक दूसरे में फॅसाते निकालते रहे.. कुछ परेशान परेशान से लग रहे थे.. एक कष्टप्रद चुप्पी वहॉ छा गई. ।कुछ लमहों के बाद थोडा सा हकलाते हुए उन्होंने कहा.. ‘ मैं आप लोगों को डार्क में नहीं रखना चाहता.. दरअसल.. मैंने पहले ही अरमान को कहा था कि आप लोगों को बता दे पर पता नहीं क्यों वह... ।पर मैने स्पष्ट शब्दों में कहा कि जब तक यह बात स्पष्ट नही होगी तबतक आगे कुछ भी नहीं हो सकता. ।’

मम्मी का कलेजा जोर जोर से धडकने लगा था । “अनुभवी आदमी है ।बातों का ही खाता पीता है. तब न दौलत का अंबार लगा रखा है।स्पष्ट नहीं तो अस्पष्ट रूप से ही लेन देन की बात करेगा.. किसी फाईव स्टार हॉटल में शादी का आयोजन..लडकी को इतने तौले सोने. . लडके के लिए महॅगी गाडी.... पता नहीं क्या कुछ चल रहा होगा इसके दिमाग में..जिसे यह विवाह से पहले ही स्पष्ट कर देना चाहता है ।पीछे छोटी बेटी भी है. .अगर यह ज्यादा नखरे दिखाता है खर्च वर्च का महाजाल फैलाता है तो हम लोग कहॉ से क्या करेंगे. पिता की इतनी आमदनी कहॉ..इतिहास के प्रोफेसर.. हैं. ।” पिता की धडकन अलग तेज हो गई थी ‘मुझे तो पहले से ही लग रहा था.. जिस सरलता से

लडका तैयार हो गया था विवाह के लिए. दाल में कुछ काला अवश्य है. सुन्दर कन्या और दहेज दोनो चाहिए ।जिसके मुँह में मुफ्त के पैसे का खून लगा हो वह पैसाखोर भला क्या क्या नहीं चाल दिखाएगा ..इतना शान..ये मिनिस्टर.. वो राज्यपाल

दिखाना तो होगा ही न इन्हें कि लडके ने प्रेम विवाह भी किया तो किसी ऐरे गैरे..दो टके वालों की बेटी से नहीं ।

कहाँ से होगा यह सब. कौन सी जमींदारी ही है दादा परदादा की।'उनके चेहरे पर एयरकंडीशन्ड कमरे में भी पसीना छलछला उठे थे ।चाची के चेहरे पर एक साथ कई भाव आ जा रहे थे । 'पैसा ही वह महत्वपूर्ण बात होती है जब लोग संभल संभल कर मन मस्तिष्क के तराजू पर तौल तौल कर बातें करना शुरू कर देते हैं।अब ये अपनी अतृप्त इच्छाओं के लिए बलि का बकडा बनाएगें लडकी वालों को..जेठ की हालत जग जाहिर है. भाई को मुसीबत में पडा देख कर उनके पति को ही आगे बढना होगा. जो भी कमाए हें विदेश में रह कर .. ।'

गहरी साँस लेकर लडके के पिता ने अपनी अंगुलियों से नजर उठा कर सामने बैठे कन्या के पिता को देखा और बडे ही बुझे हुए स्वर में कहा 'दर असल हमलोग....हैं।'

कई कई नुकीले पत्थर सहस्त्रों हाथों से जैसे कन्यावालों के कलेजे को निशाने बना कर फेंक दिए गए हों. अब तक वे जिस तर्क वितर्क के महासमंदर में गोते लगा रहे थे वैसा भी होता तो ठीक था. मां को लगा था उसकी सांसे रूक गई हैं...पिता को वहाँ का हर चीज घूमता हुआ दिखाई दे रहा था ।लडके के पिता ने अपनी नजरें झुका ली थी ।चाची ने हिम्मत दिखाई बोली "मैं जरा अरमान से मिलना चाहती हूँ।'उसकी माँ नखरे करने लगी "उसके सिर में दर्द हो रहा है..अभी मैं बाम लगा कर आती हूँ।'दस मिनट बाद वह बाहर निकली तो चाची सीधे उसके कमरे में चली गई थी 'बेटा आप ने हमलोगों को धोखे में क्यों रखा..।' बडी मुश्किल से उन्होंने अपने स्वर को स्थिर रखने की कोशि श की थी । 'उसमें हमारी क्या गलती है जो हम... में पैदा हुए।' स्वर में निर्लज्जता. उदंडता

और तिरस्कार सब कुछ था।पहली बार उसने उनसे यूँ ऑखों मे ऑखें डालकर बात की थी । 'हमारी ही क्या गलती है जो हम पंडितों में पैदा हुए . लेकिन छुपाने जैसी कोई बात तो नहीं की हमने.. ।' "बता तो दिया.. अगर न बताता तो.. अगर शादी के बाद बताता तो. ।'चाची दंग रह गई थी उसके इस बदले स्वरूप को देखकर ।

'मोहिता का समय काटना मुश्किल हो रहा था आज. कई बार अरमान को फोन लगाना चाहा मगर आखिरी नंबर आने से पहले ही काट देती । काफी समय हो गया . ।एक एक पल जैसे एकएक दिन हो रहे थे ।शायद अरमान भी उनलोगों के साथ ही आ र हा होगा ।

उसी वक्त कॉल बेल बजी. ।मोहिता के पहिए लगे पैर फिसलते हुए से दरवाजा खोल रहे थे ।यह क्या. उसका दिल किसी आशंका से धडक उठा । मम्मी और चाची वहॉ जाने से पहले ब्युटी पार्लर से मेक अप करवा के गए थे. इनका चेहरा इतना स्याह क्यों लग रहा है. एक दम बीमार बीमार . थके थके से. पापा नजरें झुकाए बेदम कदमों से सोफा पर बैठ गए थे ।कोई कुछ बोल क्यों नहीं रहा हैं. मोहिता के कान अधीर हो चले थे.वहॉ के मधुर प्रसंगों को सुनने के लिए ।जल्दी से फ्रीज से ठंढा पानी गिलासों में डाल कर लाई. ढीठ बनते हुए उसके व्याकुल स्वर फूट ही पडे "हुआ क्या जो आप लोग इतने उदास ओर खामोश हैं.. ।' इतने में मम्मी की ऑखों से त्रिवेणी बांध तोड बैठी ।अपने हाथ से आसुओं को पोछते बोल पडी 'बेटी ..उसने तुम्हें गुमराह कर रखा था. ।'अचंभित...ठगी ठगी सी मोहिता पता नहीं क्या क्या बातें सुनती रही थी ।उसके ऑखों के सामने का नीला आसमान पिघलते पिघलते धूँआ. धूँआ सा रह गया था ।उस भयंकर धूँआ में उसका दम घुटने लगा ।उन जहरीली गैसों के बीच घिरी वह बडी मुश्किल से अपने कमरे तक आई थी ।सब कुछ धूँधला नजर आ र हा था. रिश्ते नाते. प्यार मोहब्बत. मानवता. सब असंख्य दानवी सिर लगा कर दशकंधर की भॉति अट्ठहास करने लगे थे ।इतना झूठ इतना वडा छलावा. प्रेम के महाजाल में इतना बडा शिकार. ।आखीर क्यों . .. कहॉ चला गया वो शाश्वत प्रेम. ।कई दिनों तक मोहिता की ऑखों

की धारा बेलगाम प्रवाहित होती रही।कैसी भूख..कैसी प्यास. पन्दरह दिनों के भीतर ही उसका चेहरा कुम्हला कर विभत्स लगने लगा था ।किसी से कोई बात नही. जबान जैसे तालू से चिपक गए थे ।घर में सब परेशान क्या पता कौन सा भयानक कदम उठा ले ।कई बार अरमान का फोन आया..बेरहमी से जिसे काटती रही थी ।जल्लाद का एक खूबसूरत चेहरा.. ।

धीरे धीरे समय ने अपने सख्त हाथों से उसे संभालना शुरू किया. वह सामान्य होने लगी थी ।घर के लोगों ने बहुत मेहनत कर के फिर से उसे अपने काम पर जाने के लिए राजी कर लिया था ।

आफिस से आते वक्त एक दिन अरमान उसका रास्ता रोक कर खडा हो गया था 'इतनी छोटी सी बात के लिए इतनी बडी सजा. मोहिता..मुझे अकेला मत छोडो..मैं तुम बिन एक कदम भी नहीं चल पाऊँगा. ।' उसकी आवाज रूँधी रूँधी सी थी ।अपने संकल्प के विरूद्ध मोहिता ने उसकी ओर देखा..ऑखें लाल लाल..कई दिनो की बढी हुई दाढ़ी. बेतरतीव बिखरे बाल..जैसे कई रातों का सोया नहीं हो. इतने दिनो के बाद वह उसे अपनी ऑखों के सामने देख रही है. पल भर के लिए लगा जैसे बालू के घरौंदों की भॅति भहर भहर कर वह उसके कदमों में बिखर जाएगी. मगर इस बार एक अजीब सी शक्ति ने आकर उसे भावुक होने से रोक लिया था ।वह एकदम खामोश थी।

"जाति.. क्या लोग प्रेम जाति पूछकर करते हें.. लैला मजनूँ ने..शीरी फरहाद ने. सोहनी महिवाल ने क्या जाति पूछ कर प्रेम किया था ।क्या मेरे प्रेम पर तुम्हें तनिक भी भरोसा नहीं ।'मोहिता इन भावुकता भरी बातों को कडवे हकीकतमें पीस कर पी गई जैसे ।उसने बडे ही संयमित स्वर में कहा "जानते हो. प्रेम के इतिहास में लैला मजनू वगैरह जैसे लोग इतने प्रसिद्ध क्यों हैं..क्योंकि वे कभी मिल नहीं पाए ।मर कर अपने अमर प्रेम की कुर्बानी दे दी.... अरमान .. मैं भी तुम्हारे साथ मर जाना चाहती हूँ।चलो अभी..इसी वक्त जमुनापुश्ता से छलॉग लगा कर अपनी जीन्दगी खत्म कर दें..चलो. देरी मत करो. अपने प्यार को रूसवा कर. दागगर कर मैं अब जीना नहीं चाहती ।मगर मैं मरूँगी तो

तुम्हारे साथ ही बॉहों में बाहें डालकर .. आओ जल्दी चले. ।' वह बावली होकर अरमान का हाथ पकड कर खींचने लगी थी. ।सडक किनारे छोटे से पार्क में जहॉ वे बातें कर रहे थे. आते जाते लोग रूक रूक कर उनका तमाशा देखने लगे थे. अरमान एकदम से घबडा गया था ।उसे समझ में नही आ रहा था कि क्या करे क्या न करे ।मोहिता का ऐसा प्रलाप. ऐसा पागलपन उसने सपने में भी नहीं सोचा था ।लोग जीने की बात करते हें उसपर कौन सा भूत सवार हो गया है. ।यह जीवन का अंत करने के लिए बेकरार है ।अजीब लडकी है ।अरमान उसके दौरे को देर तक बर्दाश्त कर सकने में अपने आप को असमर्थ समझते हुए धीरे धीरे उससे अपना हाथ छुडा कर अपने बाईक पर फरार हो चुका था ।देर तक वहॉ बेंच पर बैठी मोहिता ऑसुओं के बीच अपनी मॉ की बात सोचती रह गई थी 'अगर सच्चा आशिक होता तो जाति धर्म क्या.. अपने दीन ईमान से भी लड कर तुम्हें अपना लेता.. ।मगर वह आशिक नहीं छलिया था क्या पता कितनी बातें पेट में दबा रखा हो. आगे जाकर कौन सा रूप दिखाए. बीच भॅवर में छोड दे.. ।यही बताने के लिए विवाह पूर्व विघ्नेश गणेश ने दीवार से गिर कर अपनी प्रतिमा खंडित कर ली होगी ।अपनी ऑसुअऐं पर विजय प्राप्त करती. कुछ और शक्तिशाली होकर वह घर आई थी और चाची को मैट्रिमापनियल पर वैवाहिक विज्ञापन डाल देने को कह कर आराम से नहाने के लिए बाथरूम चली गई थी ।

कामिनी कामायनी. **23।9।2012**